समाधितंत्र

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
भट्टारकश्री सकलकीर्ति
श्रुतभण्डार ईडर (गुजरात)

१२०

समाधितन्त्र

अपूर्ण

कर्म्मातणीसत्ताइंछांडइं॥ तिणिकारणि॥ सरीरनामगोत्रवेदनीजवलगइछइ
इ॥ तेवलगइछतसकलसिद्ध कहियइ॥ हिवइश्रीगुरुराजवलगइवेदनी
जीवइ॥ तेवलगइंअनंतसुषाकेवलीकंकिमकहियइ॥ अत्राहगुरुः॥ दे
मनः॥ वेदनीकर्म्मजाति॥ २॥ दोनि॥ एकसातावेदनीकर्म्म॥ १॥ अनइ
बीजाअसातावेदनीकर्म्म॥ २॥ एवंभेद॥ २॥ मोहिनीकर्म्मजुपरद्रव्यक
इविषइप्रीतिऊपजावइ॥ अनइद्वेषऊपजावइ॥ तेमोहिनीकर्म्मकहिय
इ॥ तेहनइबलइकरीवेदनीकर्म्मपीडइ॥ आत्मस्वभावकुंतीव्रकरीनइ
॥ भ्रमकुंऊपजावीनइ॥ परस्वभावइरागद्वेषऊपजावइ॥ तेमोहिनीकर्म्मअ
तिसबल॥ सर्वकर्म्मकुंतीसमर्थ॥ तेजवक्षयगयातववेदनीकर्म्मकाब
लछूटाकेवलीकुंपीडीनसकइ॥ जिममंत्रअनइउषधकइबलइकरीम

समाधितं नथविषयकोविकारमोहोत्पादइ॥ तवातविषयरूपकंमारीनसकइजिम॥
तिमामाहिनीकर्मकरहरूयिं॥ वेदनीकर्मजीवकंपीडीनसकइ॥ सक
लसिद्धअनंतचतुष्टयमहिमाकोधणी॥ सयोगिकेवलीकहियइ॥ तर
मइगुणठाणइ॥ छदमस्थज्ञानविलयगया॥ मतिज्ञान॥१॥ श्रुतज्ञान॥२॥
अवधिज्ञान॥३॥ मनःपर्ययज्ञान॥४॥ पहुदमस्थज्ञानकहियइ॥ चक्षुद
र्शन॥१॥ अचक्षुदर्शन॥२॥ अवधिदर्शन॥३॥ पत्रिणिदर्शनछदमस्थक
हियइ॥ केवलीकंनहोइ॥ मनोविकारनहोइ॥ अक्षरीकवाणीनहो
इ॥ सकलसिद्धकं॥ कृतकृत्यकहियइ॥ जिणीआत्मकार्यसर्वकीधा
॥ सिद्धसाध्यहूया॥ जन्मजरामरणकंतीवगालां॥ तीर्थंकरदेव॥ अथ २०३
वासामान्यमूढाकेवली॥ साश्वतीलक्ष्मीनोलाहा निर्विकार॥ अचिंत्य

रीनइ॥ नलीजइ॥ अथवालोलोकमइमाहेउनजाणइ॥ वस्त्रकोगुणमहिमानजाण
इ॥ तेहनइथाहेमालै॥ अल्पइद्रव्यदेईनइ॥ तेवस्त्रनलीजइ॥ अथवाकुणही
की॥ काईवस्त्रवीसराणालइनालणी॥ जीवजइहुंतै॥ आपणैहितवांछइछइं॥ तातें
पराईलक्ष्मीमवांछि॥ अथेचौथेव्रतं॥ ३॥ चौथोव्रतकहियइछइ॥ सरीरतांजीव
विचारतां॥ घिणावणा॥ हाडाकापांजरौ॥ चाबडीवढ्यामलमूत्राकाघर॥ सदाप
राधीन॥ अपवित्राराणइकरीजडीरा॥ फूटाणाहाडाजाजरासरीषा॥ विसषइस्त्री
नासरीर॥ दषतालेजावाणा॥ सदाकालदुर्गंध॥ इसासरीरकइविषइ॥ जइप्र
मकरिस्यइ॥ तासुरवपिंडआपणौतें॥ इःरकसमुद्रइबालिस्यइ॥ लघुतापामि
स्यइ॥ रजीव॥ स्त्रीनारूप॥ लावण्यजोवनकला॥ देषीनइजइहुंतै चूलिस्यइ॥

समाधितं त्तातरीसंपदं ॥ ऊमसंपदालूटास्यइ ॥ विसमइकरीनइ ॥ जीवडंपराईकलत्रदेषी
नइ ॥ इणीसावनाइं ॥ आपणोमनरमाडि ॥ आपणापरिणामदृढसीकं ॥ अंक्रमतेंदे
इ ॥ एश्रीमातासरीषीदीसइछइ ॥ जिसीमारीमाताछइ ॥ अनइजेइआपणसमानजो
वनकरिसुंदरी ॥ सुरूपसुंदराकार ॥ परस्त्रीजइदीसइ ॥ तारजीवआपणीसहोदरबि
हिनकरिदेषीयइ ॥ अनइजइआपणइंछोटीबालकलघुवेसादेषियइतारजी
व ॥ आपणीजाइबेटीपुत्रीकरीदेषियइ ॥ मनवचनकायाइंकरीनइ ॥ परस्त्रीसं
×नार गमेंकीजइ ॥ इसइपरिणामइ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतकहियइ ॥ ब्रह्मव्रतचउथी ॥ ५ ॥ परिग्रह
त्यागव्रतकहियइछइ ॥ एकनिर्विकारपदाकाधणी ॥ जीवडं ॥ सरीरादिकपरिग्रह
त्रस्मइं ॥ छितनाहोइ ॥ भवियद्जीव ॥ अनेरानातासमाहिला ॥ एकांगइपीडइ ॥ का १२५

इ प्रतीकार करीनइ ॥ अनेरा कन्हइ परिग्रहा तं अंतपणो पामइ ॥ पिणि तेह जीव ऊप
रि ग्रहना मा ग्रहनइ छइ ॥ तेह कारणि दीप कारइं ॥ अंतपणो नादइ ॥ सर्वांगपीडइ ॥ ते
हनइ संगइ ॥ ते सुष वांछइ छइ ॥ तिणी परिग्रह करीनइ ॥ आपणाकं संपदा जाण
इ छइ ॥ तिहां सुष किम ऊपजइ इसइ जीव ॥ जिहां त्रस थावरका घात होइ ॥ परलोकम
कइ जेहनां फल नरकमां लामा विषइ ॥ तिणि परिग्रहइ हंते रातो छइ ॥ धिग जीव।
तेहनइ ॥ पुत्री पुत्र कलत्र मित्र बांधव। जिहां तइं प्रेम कीधो छइं ॥ आपणो परिवा
र जाणीनइ ॥ तेहनइ कारणि ॥ धनधान्यादि परिग्रह मेलीनइ ॥ आपणो आत्मा
॥ पापइं भारइं छइं ॥ ते परिवार तु आदरवतां ॥ सर्व विलय पामिस्यइ ॥ किं ते परि
वार सर्व देषतां ॥ अर्म जनमको फल पापसं बाला मांडी बांधीनइ ॥ नरकइ

जाय छे। जिम मूर्छा रताप ई करीन इ पीड्यो कोइ॥ धूतजी मरण सुधन इ कारणि। तिम तं
परिग्रहास र्वथल ई॥ सुखन इ कारणि॥ जइ जीव खीणा रागी छ र ई पीड्यो॥ धूतजी
माता सुधपामइ॥ तृष्णा छा र छूटइ॥ तातूं परिग्रहइ करीन इ सुख पामिस्यइ॥ धू
णी परिसं ड मकोलालची॥ परिग्रह इयूं तादाझइ॥ सदाकाल इ खीछू रइ॥ संता
षजल इ करीन इ॥ लाताम्नित्र पद्मभावइ॥ बाहिरी मामिग्री कुंती॥ आपणो परि
णाम संवरइ॥ त परिग्रहपरिमाणव्रत कहियइ॥ परिग्रहत्यागव्रतं॥ ५॥ अथा
नंतरं॥ गुणव्रत कहियइ छइ॥ गुणव्रत त कहियइ॥ जीवाज्ञा आपणा सुघाह्द
व्रतल षीनइ॥ तिह्वानो शांतरस याषीनइ॥ सर्वज्ञ गत्र पाषत्र तिह्वाना पूताव॥ ११६
जाणीनइ॥ संताष कीजइ॥ असंजमस्थं॥ जाणि आवणा॥ जसेवरियइ॥ आ

व ॥११॥ एवंएकादशभेदविक्रियालब्धि ॥३॥ चउथीतपोरिद्धिभेद ॥७॥ प्रत्येकइंक
हियइछइं ॥ उग्रतपोलब्धि ॥१॥ दीप्ततपोलब्धि ॥२॥ तप्ततपोलब्धि ॥३॥ महातपोलब
ब्धि ॥४॥ घोरतपोलब्धि ॥५॥ घोरपराक्रमतपोलब्धि ॥६॥ घोरगुणब्रह्मचारीतपोल
ब्धि ॥७॥ एवंतपलब्धि ॥ ७ ॥ पांचमीबलरिद्धिः ॥ तद्भेदत्रिणि ॥ मनोबली ॥१॥ व
चनबली ॥२॥ कायबली ॥३॥ एवंबललब्धि ॥ ३ ॥ छट्ठीऔषधरिद्धिः ॥ तद्भेदआठ ॥ प्र
त्येकइंकहियइछइं ॥ आमर्षस्पर्शी ॥१॥ खेलस्पर्शी ॥२॥ जल्लस्पर्शी ॥३॥ मलस्पर्शी ॥४
॥ विट्स्पर्शी ॥५॥ सर्वौषधस्पर्शी ॥६॥ आसीविष ॥७॥ दृष्टिविष ॥८॥ एवंऔषधरिधि
॥ ८ ॥ सातमीरसरिद्धिः ॥ तद्भेदप्रत्येकइंनामकहियइंछइं ॥ आसीविष ॥१॥ दृष्टिविष ॥२॥
क्षीरश्रावी ॥३॥ मधुश्रावी ॥४॥ सर्पिश्रावी ॥५॥ अमृतश्रावी ॥६॥ एवंरसछभेदरसरिद्धि

समाधितं·

॥७॥ आठमी खेत्ररिद्धि॥ तेहना बि भेद॥ एक अक्षीणमहानसलब्धि॥ १॥ अनइ बीजी
अक्षीणमहालयलब्धि॥ २॥ एवं च उसठि॥ ६४॥ रिद्धि को धणी तो पाधन अनंत महिमाम
निधान॥ विवहारइं सूता॥ आपणइं रसइं जागइ योगी॥ शांतरस को भोगी॥ त
हनइं पञ्च परवइ॥ अमय पेइ॥ निर्वाण होइ॥ जइ वीतराग मुद्राइं आपणो रस चा
खा होइ॥ तां तहनइं उपशम भावइं॥ बाहिर डरइ विकार॥ सर्व परीसह को
दुख सरीषो मी ठा लागइ॥ अनंत कर्म्म रागइ पीड्यो॥ अनादि को सूतो॥ मिथ्यामद
इं घूल्यो॥ मोह कर्दमइं खूतो॥ जव लागइ संयमी होई नइं॥ परीसहना रस उपशम भा
वइं न सहइ॥ तव लगा लइं कर्म्म कलंक थकी वेगलो होइ मन होइ॥ इस्यो लब्धि को ध॥
णी वीतराग योगी॥ तहनइं किहां इं दुखनां होइ॥ विवहारइं सूतां कुं॥ आपणइ

९६२